अखिल भारतीय वैश्य महासभा की कार्ययोजना एवं सदस्यों की संख्या बढ़ाने के उद्देश्य को लेकर अखिल भारतीय वैश्य महासभा का प्रांतीय अधिवेशन इंदौर में संपन्न हुआ।

समाचार
www.sanjhalokswami.com

बचपन से पचपन तक फ्लोरोसिस से प्रभावित

काली तोलिया भावोर का पूरा शरीर प्रभावित हो चुका है।

लापरवाह प्रशासन बेखबर

दर्जनों लोग है प्रभावित

ग्राम मियाटी एवं जशोदा खुमजी में गंभीर बीमारी फ्लोरोसिस ने दर्जनों लोगों को जकड़ रखा है। जिसमें कैलाश पिता धुलिया वसुनिया दोनों पैर, भूरसिंह तोलिया भाबोर हाथ, मुंह, पैर व मानसिक तोर से प्रभावित, राहुल सोहन भाबोर के दोनों पैर, राहुल सुरसिंह भाबोर दोनों पैर, संजु दरू भाबोर दोनों पैर, मुन्ना जलिया ओहारी दोनों पैरो से जन्म से एवं सुनिल टिटिया भाबोर दोनों पैरों से प्रभावित है। इसी तरह भंडारिया फलिये में १० वर्ष तक के ६ बच्चों को दांतो पर असर होना प्रारंभ हो चुका है। काली तोलिया भाबोर ३८ वर्ष विगत ५ वर्षों में फ्लोरोसिस ने पूरे शरीर को जकड़ लिया है। काली की उम्र कम है लेकिन देखने में पचपन से अधिक दिखाई दे रही है। काली बीपीएल राशनकार्ड धारी है उसके बाद भी उसके शरीर के लिए शासकीय उपचार कही से भी नहीं मिल पाया। प्रायवेट अस्पताल में उपचार के बाद भी स्वास्थ्य में थोड़ा भी सुधार नहीं आया। जिससे परेशान होकर अपनी जिंदगी भगवान के भरोसे सौंप दी है। काली का शरीरी जगह-जगह से मुड़ चुका है जिसके कारण उसे दोनों पैरों के साथ लकड़ी का सहारा लेना पड़ रहा है। उक्त सभी पीड़ितों को प्रशासन द्वारा नियमित उपचार नहीं किए जाने से बच्चों का भविष्य खतरे में पड़ने लगा है। कुछ गर्भवती महिलाए भी हैंडपंप से पीने का पानी उपयोग कर रही है जिन्हें अभी से अपने बच्चों पर खतरा मंडराता महसुस हो रहा है।

स्कूली बच्चे जिनके पैरों में टेड़ापन आ चुका है।

कलसिंह भूरिया

झाबुआ, १२ अक्टूबर

केंद्र व राज्य सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न गंभीर बीमारियों के नियंत्रण हेतु करोड़ों रूपए फूंक रही है लेकिन नतीजा शून्य ही नजर आता है। दर्जनों एनजीओं सरकार से करोड़ों का प्रोजेक्ट लेकर विभिन्न क्षेत्रों में काम कर रहे। इनके द्वारा लाखों रूपए कागजों पर प्रतिमाह खर्च हो रहे लेकिन परिणाम संतोषप्रद दिखाई नहीं दे रहे है कुपोषण के बाद अब ग्रामीण फ्लोरोसिस नामक गंभीर बीमारी से पीड़ित होने लगे है। एक ऐसा ही मामला विकासखंड थांदला के ग्राम मियाटी एवं रामा विकासखंड में ग्राम जशोदा खुमजी में देखने को मिला। जहां बचपन से लेकर पचपन तक के लोग प्रभावित हो चुके है। यह बीमारी क्षेत्र में हैंडपंप से निकल रहे पीने के पानी के माध्यम से लोगों के शरीर में पहुंची है। इस बीमारी के नियंत्रण हेतु विगत एक वर्ष से इंनरेम फाउडेशन झाबुआ द्वारा काम किया जा रहा है लेकिन बीमारी के नियंत्रण में परिवर्तन नहीं दिखाई दे रहा है। इस गंभीर बीमारी के लक्षण विगत वर्षो में दिखाई देने पर जिला प्रशासन द्वारा महज एक हैंडपंप पर वाटर फिल्टर लगाकर औपचारिकता पूरी कर ली उसके कुछ समय पश्चात फिल्टर मशीन को स्थानीय लोगों ने निकालकर एक तरफ रख दिया। ग्रामीण बताते है की वे इस बीमारी से अनभिज्ञ है वे नहीं जानते की फ्लोरोसिस क्या है। लेकिन यह बात वे स्वीकारते है कि उन्हें जिस बीमारी ने जकड़ा वह फ्लोरोसिस है जिससे शरीर के अंगों में टेड़ापन आ जाता है। उक्त संस्था के एफएमवी मेनेजर सचिन वाणी, बसंत चौहान व कल्पना बिलवाल ने बताया कि ग्राम मियाटी के स्कूल फलिया एवं भंड़ारिया फलिये में औसतन प्रत्येक तीसरे घर में दो या तीन लोग फ्लोरोसिस से पीड़ित है। सोचनीय तथ्य है कि प्रशासन इस गंभीर मुद्दे पर गंभीरता नहीं दिखाई। जबकि इस क्षेत्र के अधिंकांश हैंडपंप ऐसे है जिनसे निकलने वाले पानी के उपयोग से लोगों प्रभावित हुए है।

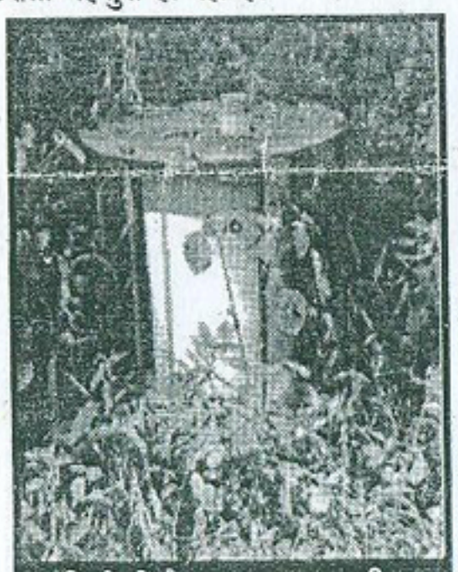

झाड़ियों में फैंका पड़ा सरकारी वाटर फिल्टर।

सार्वजनिक स्थल पर वाटर फिल्टर नहीं

ग्राम मियाटी व जशोदा खुमान में हैडपंप व बोरिंग से निकले पानी के उपयोग से ग्रामीणों को फ्लोरोसिस बीमारी ने प्रभावित किया यह स्पष्ट हो चुका है उसके बाद भी जिला प्रशासन, पीएचई, स्वास्थ्य विभाग एवं महिला बाल विकास विभाग के कांनों पर जूं तक नहीं रेंग रही है। औपचारिकता के तौर पर एक दो वाटर फिल्टर लगा दिए गए उसके बाद फिर से उन पर ध्यान नहीं दिया गया। महज एक दो हैंडपंपों पर स्थानीय प्रशासन द्वारा वाटर फिल्टर लगाए है। लेकिन गांव के मीडिल स्कूल, इजीएस शालाए, आंगनवाड़ी केंद्र व माध्यमिक शालाए जहां पर प्रतिदिन सैकड़ो स्कूली बच्चे व अन्य ग्रामीण एकत्रित होते है वहां पर वाटर फिल्टर की कोई सुविधा नहीं की गई। देखा गया कि स्कूल के बच्चें फ्लोरोसिस युक्त पानी पीने को मजबुर हो रहे है।

यह बोले जिम्मेदार

ऐसा कुछ है तो मै पीएचई व स्वास्थ्य विभाग को संयुक्त रूप से भेजकर उचित कार्यवाही करवाती हुं। साथ ही ग्रामीणों की बैठक करवाकर वाटर फिल्टर का पानी उपयोग में लेने के लिए मार्गदर्शित किया जाएगा।

श्रीमती जयश्री कियावत, कलेक्टर झाबुआ

यदि गांव में लगे हैडपंप से फ्लोरोसिस युक्त पानी निकल रहा है तो में इसे तुरंत बंद करवाता हूं और ग्रामीणों को पानी की दूसरी व्यवस्था उपलब्ध की जाएगी। रही वाटर फिल्टर की बात वह स्वास्थ्य विभाग का काम है उन्हें देखना चाहिए की ग्रामीण वाटर फिल्टर पानी का उपयोग कर रहे या नहीं।

श्रीकांत पटवा,
पीएचई झाबुआ